समाचार-पत्रों का आदर्श

हम सब संपादक पत्रों की उन्नति चाहते हैं। पर हमें स्मरण रखना चाहिए कि इस उन्नति के साथ-साथ हमारी स्वातंत्र्य-हानि अवश्यंभावी है। इसके लिए पूंजीपति और संचालक व्यवसाय की आवश्यकता है..... पत्र निकालकर सफलता पूर्वक चलाना बड़े-बड़े धनियों अथवा सुगठित कम्पनियों के लिए ही संभव होगा। पत्र सर्वांग सुंदर होंगे, आकार बड़े होंगे, छपाई अच्छी होगी, मनोहर, मनोरंजक और ज्ञानवर्धक चित्रों से सुसज्जित होंगे, लेखों में विविधता होगी, कल्पकता होगी, गंभीर गवेषणा की झलक होगी, और मनोहरिणी शक्ति भी होगी, ग्राहकों की संख्या-लाखों में गिनी जाएगी। यह सब कुछ होगा पर पत्र प्राणहीन होंगे। पत्रों की नीति देशभक्त, धर्मभक्त, अथवा मानवता के उपासक महाप्राण संपादकों की नीति न होगी- इन गुणों से संपन्न लेखक विकृत मस्तिष्क समझे जायेंगे, संपादक की कुर्सी तक उनकी पहुँच भी न होगी। वेतन भोगी संपादक मालिक का काम करेंगे और बड़ी खूबी के साथ करेंगे। वे हम लोगों से अच्छे होंगे पर आज भी हमें जो स्वतंत्रता प्राप्त है वह उन्हें न होगी।

समाचार पत्र के दो मुख्य धर्म है, एक तो समाज का चित्र खींचना और दूसरे उसे सदुपदेश देना। हमारा दूसरा कार्य लोक शिक्षण हमारा सच्चा धर्म है। इसी के द्वारा हम देश की और जनता की सच्ची सेवा कर सकते हैं। यदि हममें योग्यता हो और हम सचमुच कुछ देश सेवा करना चाहते हों तो हमें अपने पत्रों में सदा सर्व प्रकार से उच्च आदर्श को स्थान देना चाहिए। सदाचार को उत्तेजन देकर कुरीतियों को दबाने का प्रयत्न करना चाहिए। पत्र बेंचने के लोभ से अश्लील समाचारों को महत्व देकर तथा दुराचरण मूलक अपराधों का चित्राकर्षक वर्णन कर हम परमात्मा की दृष्टि में अपराधियों से भी बड़े अपराधी ठहर रहे हैं, इस बात को कभी न भूलना चाहिए। अपराधी एकाध पर अत्याचार कर दण्ड पाता है, और हम सारे समाज की रुचि बिगाड़ कर आदर पाना चाहते हैं। विचार कीजिए हम कितना बड़ा पाप कर रहे हैं।

भ्रातृभाव से आप सब संपादकों से प्रार्थना करता हूं कि परमेश्वर ने आपको जो बड़ा पद दिया है, उसका सदुपयोग कीजिए और समाज को सदा उन्नत करते रहना अपना धर्म समझिए। इस अवसर का सदुपयोग कर आप स्वयं धन्य होइए और जननी जन्म-भूमि का मुख संसार में उज्ज्वल कीजिए मैं चाहता हूँ कि ऐसे युवक इस काम में आवें और जब तक संपादक पराधीन नहीं हो गए हैं तब तक इस साधन का उपयोग कर लें।

मेरे मत से संपादक में साहित्य और भाषा ज्ञान के अतिरिक्त भारत के इतिहास का सूक्ष्म और संसार के इतिहास, समाज शास्त्र, राजनीतिक शास्त्र और अंतर्राष्ट्रीय विधानों का साधारण ज्ञान होना आवश्यक है। अर्थशास्त्र का वह पंड़ित न हो पर कम से कम भारतीय और प्रांतीय बजट समझने की योग्यता उसमें होनी चाहिए। इस विषयों का साधारण ज्ञान प्राप्त करके यदि कुछ थोड़े से भी युवक अनुभवी संपादकों की अधीनता में कुछ दिन काम करें तो निस्सन्देह वे अपने गुरू से आगे बढ़ जाएंगे।

– बाबूराव विष्णु पराड़कर

(1925 में वृन्दावन में प्रथम संपादक सम्मेलन के अध्यक्षीय उद्‌बोधन का अंश)